



विद्यालय पत्रिका Vidyalyaya Patrika



केन्द्रीय विद्यालय कांकिनाड़ा

KENDRIYA VIDYALAYA KANKINARA

2022-23



संपादक मण्डल

मुख्य सरंक्षक

श्री निरंजन पानी, प्रभारी प्राचार्य



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संपादक

अध्यापक

हिन्दी अनुभाग

श्रीमती रजनी बाला
स्नातकोत्तर शिक्षक -हिंदी

संस्कृत अनुभाग

श्री किशोर दत्ता
स्नातक शिक्षक -संस्कृत

अंग्रेजी अनुभाग

श्रीमती शर्मिष्ठा मिश्रा
स्नातकोत्तर शिक्षक -अंग्रेजी

छात्र

हिन्दी अनुभाग

सुश्री मुस्कान कुमारी
वर्ग- XI

संस्कृत अनुभाग

सुश्री ऋषिका गुप्ता,
वर्ग- VIII

अंग्रेजी अनुभाग

सुश्री ज़ारा खान
वर्ग- XI

पृष्ठांकन

श्री पलाश अधिकारी

पुस्तकालयाध्यक्ष





तत् त्वं पूरुषं अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

II

मार्ग दर्शक एवं प्रेरणा स्रोत



श्री य. अरुण कुमार, उपायुक्त
(के.वी.एस क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता)



श्री अमित बैद्य, सहायक आयुक्त
(के.वी.एस क्षेत्रीय कार्यालय - कोलकाता)



श्री संजिब सिन्हा, सहायक आयुक्त
(के.वी.एस क्षेत्रीय कार्यालय - कोलकाता)



श्री दिबाकरा भोई, सहायक आयुक्त
(के.वी.एस क्षेत्रीय कार्यालय - कोलकाता)



श्री चिंतापल्ली विजया रत्नम. सहायक आयुक्त
(के.वी.एस क्षेत्रीय कार्यालय - कोलकाता)



Mr. Y. Arun Kumar
Deputy Commissioner (KVS RO Kolkata)



Kendriya Vidyalaya Sangathan , Kolkata Region
EB Block, Sector-1, Salt Lake, Kolkata-700064

Deputy Commissioner's Message

The great philosopher and inventor, Thomas Alva Edison once said, "The value of an idea lies in the using of it." NEP 2020 has given profound stress on innovation and invention. The 21st century learners have all the resources to make their lives noteworthy by gaining technical expertise in various fields. The doors to learning will never be shut for those who want to acquire knowledge and use it for personal as well as societal development.

This school magazine is a creative platform to help students give wings to their imagination. It is important to voice your opinion and see your ideas find a space on a printed paper. The sense of achievement that a child feels acts as a self- motivation which should never be undermined.

Kendriya Vidyalaya Kankinara has been working relentlessly to make learning a fun filled activity and turn the students into life long learners. The students have tried their best to bring out their creative side and have embarked on the journey towards excellence. I would like to congratulate the entire team of this Magazine for showcasing the spirit of creativity of the students and wish them all the very best for its success.

Thank you.

Mr. Y. Arun Kumar
Deputy Commissioner
KVS Regional Office – Kolkata





**Col. Ajay Kumar Singh, Commandant,
ESD, Kankinara &
Chairman VMC, K V Kankinara**



सत्यमेव जयते

Chairman's Message

“Excellence is continuous process and not an accident”. These words of A.P.J. Abdul Kalam ring true in all its form and manner. Kendriya Vidyalaya Sangathan's never ending pursuit of excellence is seen clearly in the students studying under its banner. Holistic development of a child is its ultimate goal. Kendriya Vidyalaya Sangathan provides varied opportunities to the students from all walks of life to learn and grow.

Kendriya Vidyalaya Kankinara has been working hard to provide a holistic learning environment to the students ever since its inception. The reflection of the same can be seen in the performance of the students in academic and co-scholastic areas. The students of KV Kankinara have never shied away from the opportunity of artistic expression. The walls of this great institution hold the murals of their excellence.

This school magazine provides a brief report of a child's artistic expanse and allows the landscape of his mind to be explored further without any hindrance. Hence I would like to convey my best wishes to this incredible team for their commitment to excellence and want to wish them luck for their future endeavours.

Thank you.

**Col. Ajay Kumar Singh
Commandant, ESD Kankinara
Chairman VMC, K V Kankinara**





Mr. Niranjan Pani
Principal I/C, KV Kankinara



Principal's Message

Dear readers, it has been my proud privilege to unveil yet another issue of the Kendriya Vidyalaya Kankinara School Magazine for the year 2022-23. This magazine is not merely the creative expression of the students and staff but also an anthem of its beliefs.

W.B. Yeats truly remarked "Education is not the filling of a pail, but the lighting of a fire." These words of Yeats equates education to passion for learning and striving for perfection. Of course education is a life long journey, and KV Kankinara wants to produce visionary thinkers who can make the world a better place to live.

This magazine is only the first step towards creating a citizen who puts his nation and its people before oneself. An introspective mind will always be thoughtful and caring. By providing the opportunity to express themselves freely, we intend to help students break away from the shackles of orthodox and stereotype thinking. Their creative expressions will eventually help them to shape their personalities for the greater good of mankind.

I would like to thank our patron, Shri. Y. Arun Kumar, Deputy Commissioner, KVS Kolkata for inspiring us in all our endeavours. I would also like to congratulate the editorial team for their relentless efforts. Mostly, I would like to thank the students and all the stakeholders for their hearty cooperation in creating this magazine.

Jai Hind!

NIRANJAN PANI
Principal I/C , KV Kankinara





सम्पादकीय

जिस प्रकार साहित्य समाज का सच्चा आईना होता है ठीक उसी प्रकार विद्यालय पत्रिका विद्यालय की वार्षिक गतिविधियों का आईना होती है। विद्यालय पत्रिका छात्रों को सृजन का मंच उपलब्ध कराती है तथा उनमें सृजनात्मकता के नवीन आयामों को तराशती है। विद्यार्थियों में चिंतन क्षमता का विकास बहुत आवश्यक है तभी वे लोकतांत्रिक मूल्यों के सजग प्रहरी बन पायेंगे। वर्तमान युग मानवीय मूल्यों के संक्रमण का युग है। यात्रिकता से परिपूर्ण इस समय में मनुष्य धन की अंधी दौड़ में शामिल होकर वस्तुओं के उपभोग में ही अपने मन की शांति खोज रहा है। भारतवर्ष राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, कबीर, स्वामी विवेकानंद व महात्मा गाँधी की भूमि है जिसने सदैव ही विश्व को शांति, प्रेम, त्याग व सद्भावना का मार्ग दिखाया है। यहाँ सदैव ही आत्मिक विकास को भौतिकता से अधिक महत्व दिया गया। परंतु वर्तमान युग की देह व पदार्थ केंद्रित सोच ने मानव को स्वार्थ के संकीर्ण घेरे में आबद्ध कर रखा है। शिक्षा सही अर्थों में तभी सार्थक है जब वह मानव को इंसान बना सके एवं देह व पदार्थ केंद्रित सोच से बाहर निकाल सके। विद्यार्थी समाज के निचले पायदान पर खड़े दुखी जन की पीड़ा को पहचान सके। साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज अपना अक्स साहित्य में देख सकता है। मुंशी प्रेमचंद ने भी कहा है कि “ साहित्यकार समाज के आगे मशाल लेकर चलता है व समाज को मानवीयता के पथ पर चलने का मार्ग दिखाता है। ”

यह पत्रिका नन्हे रचनाकारों को उचित अवसर प्रदान करती। यह विद्यार्थियों के रचना-सुमन को बिखेरती जीवन का संदेश प्रदान करती है। इसी क्रम में यह लघु प्रयास विद्यालय पत्रिका के रूप में आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत है। यदि यह रचना-सुमन आपके म्लान मुख पर कुछ सस्मित किरणें बिखेर सके तो नव रचनाकारों की रचनाधार्मिता का संबल मिल जाएगा।

केन्द्रीय विद्यालय कांकिनाडा की “विद्यालय पत्रिका” का प्रकाशन बड़े ही उल्लास का विषय है। इस पत्रिका के संपादन का महनीय कार्य हमें देने के लिए हम विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य श्री निरंजन पाणि जी के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं।



श्रीमती रजनी बाला
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

शैक्षिक गौरव 2022-23

AISSE: 2022-23 RESULT



**ADITYA SAH -
95 %**



**TANISH KUMAR -
91.2%**



**SWATI SHAW -
91.2%**

AISSCE: 2020-21 RESULT



**BHOOMIKA SHAW -
87%**



**ANKIT GOND -
86.2%**

KV KANKINARA RANKED 2ND POSITION IN AISSE IN KOLKATA REGION



विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



प्रातःकालीन सभा (Morning Assembly)



प्रातःकालीन सभा (Morning Assembly)



उन्मुखीकरण (Orientation programme)



उन्मुखीकरण (Orientation programme)



डीसी मैम का दौरा (DC Mam Visit)



डीसी मैम का दौरा (DC Mam Visit)

यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।

अर्थात् : मनुष्य के शरीर में रहने वाला आलस्य ही उनका सबसे बड़ा शत्रु होता है, परिश्रम जैसा दूसरा कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता है।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



योग दिवस समारोह (Yoga day celebration)



योग दिवस समारोह (Yoga day celebration)



विश्व साइकिल दिवस (World Bicycle Day)



विश्व साइकिल दिवस (World Bicycle Day)



विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस (Partition Horrors Remembrance Day)



विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस (Partition Horrors Remembrance Day)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
अर्थात : माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



हर घर तिरंगा (Tricolour in every house)



हर घर तिरंगा (Tricolour in every house)



युवा संसद प्रतियोगिता (Youth Parliament Contest)



युवा संसद प्रतियोगिता (Youth Parliament Contest)



स्वच्छता पखवाड़ा (Cleanliness Programme)



स्वच्छता पखवाड़ा (Cleanliness Programme)

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।

अर्थ : धर्म है क्या? धर्म है दूसरों की भलाई। यही पुण्य है। और अधर्म क्या है? यह है दूसरों को पीड़ा पहुंचाना। यही पाप है।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



एक भारत श्रेष्ठ भारत (EBSB celebration)



एक भारत श्रेष्ठ भारत (EBSB celebration)



आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण (Disaster Management Training)



आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण (Disaster Management Training)



स्वतंत्रता दिवस (independence day)



स्वतंत्रता दिवस (independence day)

क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च हीः स्तम्भो मान्यमानिता।

यमर्थान् नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

अर्थात : जो व्यक्ति क्रोध, अहंकार, दुष्कर्म, अति-उत्साह, स्वार्थ, उद्वेगिता इत्यादि दुर्गुणों की और आकर्षित नहीं होते, वे ही सच्चे ज्ञानी हैं ।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



कब्बडी प्रतियोगिता (kabbadi competition)



कब्बडी प्रतियोगिता (kabbadi competition)



वार्षिक निरीक्षण (Annual inspection)



वार्षिक निरीक्षण (Annual inspection)



शिक्षक दिवस समारोह (Teacher's Day Celebration)



शिक्षक दिवस समारोह (Teacher's Day Celebration)

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतो सन।

मणिना भूषितो सर्पः किमसौ न भयंकरः॥

भावार्थः दुर्जन अर्थात् दुष्ट लोग भी अगर बुद्धिमान हों और विद्या प्राप्त कर लें, तो भी उनका परित्याग कर देना चाहिए। जैसे मणि युक्त सांप भी भयंकर होता है। इसका मतलब यह हुआ कि दुष्ट लोग कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, उनकी संगत नहीं करनी चाहिए।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



राष्ट्रीय एकता दिवस (National unity Day)



राष्ट्रीय एकता दिवस (National unity Day)



केवीएस स्थापना दिवस (KVS Foundation Day)



केवीएस स्थापना दिवस (KVS Foundation Day)



बाल दिवस समारोह (children's day celebration)



बाल दिवस समारोह (children's day celebration)

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

भावार्थः विद्या से विनय अर्थात् विवेक व नम्रता मिलती है, विनय से मनुष्य को पात्रता मिलती है यानी पद की योग्यता मिलती है। वहीं, पात्रता व्यक्ति को धन देती है। धन फिर धर्म की ओर व्यक्ति को बढ़ाता और धर्म से सुख मिलता है। इस मतलब यह हुआ कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए विद्या ही मूल आधार है।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



गांधी जयंती समारोह (Gandhi Jayanti)



गांधी जयंती समारोह (Gandhi Jayanti)



वार्षिक खेल दिवस (Annual sports day)



वार्षिक खेल दिवस (Annual sports day)



रूबेला टीकाकरण (Rubella vaccination)



रूबेला टीकाकरण (Rubella vaccination)

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥

भावार्थ : मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन उसमे बसने वाला आलस्य हैं । मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र उसका परिश्रम हैं जो हमेशा उसके साथ रहता हैं इसलिए वह दुखी नहीं रहता ।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day)



राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day)



नेताजी जन्म दिवस (Netaji birthday Celebration)



नेताजी जन्म दिवस (Netaji birthday Celebration)



गणतन्त्र दिवस समारोह (Republic Day Celebration)



गणतन्त्र दिवस समारोह (Republic Day Celebration)

रूप यौवन सम्पन्नाः विशाल कुल सम्भवाः।

विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुकाः॥

भावार्थः अच्छा रूप, युवावस्था और उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से कुछ नहीं होता। अगर व्यक्ति विद्याहीन हो, तो वह पलाश के फूल के समान हो जाता है, जो दिखता तो सुंदर है, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं होती। अर्थात् मनुष्य की असली खुशबू व पहचान विद्या व ज्ञान ही है।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



कालादिवस समारोह (Black day Celebration)



कालादिवस समारोह (Black day Celebration)



अध्यक्ष का दौरा (visit of Chairman)



वीएमसी बैठक में अध्यक्ष (chairman in vmc meeting)



छात्रों के घर में शिक्षकों का दौरा (visit of teachers in students house)



न ही कश्चित् विजानाति किं कस्य श्वो भविष्यति।
अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥
अर्थात् : किसी को नहीं पता कि कल क्या होगा इसलिए जो भी कार्य करना है आज ही कर ले यही बुद्धिमान इंसान की निशानी है।

विद्यालय गतिविधियों की झलक (GLIMPSES OF VIDYALAYA ACTIVITY)



वैश्विक हाथ धुलाई दिवस (Global Hand washing Day)



वैश्विक हाथ धुलाई दिवस (Global Hand washing Day)



विश्वकर्मा दिवस (Vishwakarma Day)



विश्वकर्मा दिवस (Vishwakarma Day)



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (international women day)



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (international women day)

मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं तथा।

क्रोधश्च दृढवादश्च परवाक्येष्वनादरः॥

अर्थ - एक मुख के पांच लक्षण होते हैं घमण्ड, दुष्ट वार्तालाप, क्रोध, जिद्दी तर्क और अन्य लोगों के लिए सम्मान में कमी।

Table of Contents

SL NO	English Section	PAGE NO
01	Challenges in Indian Education	01-03
02	Last day at School	04
03	Gentle Reminders, Who am I	05
04	My idea of a happy life	06
05	A Message from Pandemic	07
06	Mobile addiction	08
07	Value of moments	09-10
08	My school library	11
09	If you wish , Dreamland	12
10	Martyr's Mother, Sooth	13
11	You can, Your best	14
12	Bitter truth, School Life	15
13	Failures are the Pillars of success	16
हिंदी अनुभाग		
14	वो खास दोस्त, माँ और पापा	17
15	घाव	18
16	क्या कसूर था उसका ???	19
17	शिक्षा - नीति, बारिश	20
18	आतंकवाद	21
19	परीक्षा का भूत, स्कूली बस्ता	22

Table of Contents

SL NO	हिंदी अनुभाग	PAGE NO
20	नई शिक्षा नीति	23-24
21	मेरी माँ , उन्हे कोई नहीं रोक सकता	25
22	कट्टर सत्य , पुस्तक	26
23	हम बालक छोटे नादान , धरती भारतवर्ष की	27
24	माता - पिता, नारी	28
25	भारत : क्या था , क्या हो गया और क्या होना चाइए	29
26	एक इंसान है ना तू	30
27	राजनिता	31
28	दवा की शीशी	32-33
	संस्कृत अनुभाग	
29	दूरदर्शनस्य लाभाः नष्टाः च	34
30	शुभ गुरुपूर्णिमा, प्रार्थना (गायत्री मंत्र.), मम संस्कृतम्	35
31	श्लोक , सुभाषितानि श्लोका	36
32	भर्तृहरि पद्यानि, सदाचारः	37
33	चित्रकारी अनुभाग	38-39



ENGLISH SECTION



Challenges in Indian Education

“Education is the most powerful weapon which you can use to change the world”– Nelson Mandela

Education is not only concerned with acquiring knowledge but it also helps us to apply the knowledge in the right way to develop a better lifestyle. It aids in the overall growth and development of an individual. It improves our personality and enhances our productivity. Moreover, an educated population acts as a human resource for a country. But this is possible only when a country can provide quality education to all individuals and cater to the educational needs of its citizens.

Where does India stand in this context? During Independence, only 18% of overall population of India was literate. But in the year 2021, the country's total literacy rate was 77.70%. The development is commendable but there is a long way to go. Also the development is very slow because the country faces numerous challenges in its education system.

After independence, one of the main challenges in the Indian education system was the persisting gender inequality in the society. Actually, the Indian society has always been patriarchal in nature. Women are always a victim of gender discrimination when it comes to education. They are denied equal educational facilities and are never treated at par with men. As a result, the female literacy rate in India has always remained lower as compared to men. But, due to various government initiatives and efforts like “*Beti Bachao Beti Padhao*”; “*Sukanya Samridhi Yojana*” etc. in this regard the situation has now changed for the better. As of 2021, India recorded a higher nationwide literacy rate among women, i.e. 71.5% of the female population.

Continue to the next page

Although the govt. has worked assiduously throughout the years to eradicate some of the major challenges in the education system but the modern era has come with a lot more difficulties. For example, lack of a budget. We all are aware of the fact that there are inequalities of income in the Indian families. As a result, some families are able to afford private schools for their children which provides them quality education and many other facilities. Whereas a student of a govt. school may not be able to get the same.

Many students are not able to pursue their dreams of becoming a doctor, lawyer or an engineer etc. because the private institutions charge exorbitant fees for the courses whereas there are limited seats in a govt. institution. We know that every individual, whether rich or poor has the right to get quality education as mentioned in the Constitution but the present scenario is totally different.

Another major drawback of the present education system is that parents give too much attention to grades rather than overall development of a child. This situation is witnessed in almost every Indian family. No matter how well the child understands the topic or achieves clarity of concept, parents want good grades in every subject irrespective of the child's likes and dislikes. This is because there is a social stigma in society that only those students succeed in life who score the maximum marks. It is not a totally correct statement. Actually, the students who give their best in their respective field are the one who come out with flying colours.



Continue to the next page

The fact is that Education system should not give rise to examination centric culture and rote learning. Instead, it should focus more on conceptual understanding and practical or application based learning approach. This will help students to not only succeed in examinations but also have a lifetime knowledge about the topic as well as its applications. With too much pressure on grades, students would feel education as a burden. They will not get time for any refreshment or extracurricular activities. Further, it will affect their mental and physical health. Also, the period of Covid-19 had been a major setback to the education system. Although, many online learning platforms were available and online classes were also taken by majority of the schools the students had developed a learning gap of almost two years which was not easy to compensate.

But the govt. had organized meeting in this regard and implemented various schemes to bridge the gap to ensure a better future for the students of the country. Also the govt. has introduced NEP, 2020 (National Education Policy, 2020) for holistic development of a child. It will comprise of various skill development programmes. It will also provide better opportunities to children in various fields like Art, Culture, Sports etc.

The main idea is to present education not as a burden in the eyes of a child but making it as interesting and fascinating as possible. This will make the learning process more enjoyable and delightful.

Nicky Sharma, Class-XI



Last day at School

We were very excited to celebrate,
Our farewell with our classmates.
Our minds were planning many things ,
But our hearts were feeling some other sufferings.
It was like our normal day,
But something was hurting us , Starting from pray.
The teacher who was used to shouting at us.
She looked like selfless God to us.
The school, where we had spent many years of our life,
It was looking heaven or something alike .
That day ,there were no groups of toppers and back benchers,
We were doing cheers , eyes fulfilled with tears.
We knew , we will be friends ,
But still we were weeping and holding hands .
Our white shirts filled with many memories ;
those shirts are still working like remedies.



Rishav Shaw , Cclass-XII

GENTLE REMINDERS

We should use the time,
To make the present fine
And the future shine.

We need to take care
And learn how to share

When someone needs help,
We should give our best
That's what our parents
And teacher's said.

We should not be sad
Thinking about the bad
We need to smile
And overcome the wild.

We should praise the day
And go out to play,

Playing in the sand
Filled with love for our moth-
erland.

Rohit Kumar Shaw , Class-XI

WHO AM I

I am the sun ,
Who shines in the sky

I am the moon
Sparkling at night .

I am the sea ,
Whose waves are high and

I am the mountain
Who never stoops down .

All these thoughts passing
through my mind

But ,still don't know who am I

But never gonna give up on
uncovering my identity .

Now I get a conclusion nothing
is me ,myself is me.

No regret for who I am ,
I will built myself , the way I

want .

Barnali Das ,class-XI



My idea of a happy life

Life is not as easy as we all long for. Ups and downs, struggles and obstacles are parts and parcel of life. Different people look into life in their perspective .So, today I would like to enlighten my views on my idea of a happy life. Happiness is depicted in different ways . For me, happiness resides in contentment . Contentment is an emotion which comes on fulfilling our cravings. Not merely to have expensive commodities or being a billionaire, one can find happiness in his/her true spirit communicating with the cosmos world. I feel very light –headed when I stay in touch with my pets. My hobbies are also a good stress buster. It helps me to deal with my anxiety. My hobbies help me to enhance my creativity and skills. My idea of a happy life is not dreaming of the luxuries rather it is the little joys and regrets of life. I want to live in absolute peace. A place far away from every day chaos and free of all stress. I long to lead a simple but cultured life. The arrival of seasonal visitors in our area during monsoon gives me a pure feeling of happiness. I strongly believe that beauty lies in the eyes of the beholder. A good soul and a keen viewer can discover the little miracles of nature. Every year I spend some of my happiest days during Durga Puja. The beauty and richness of India is my pride. I taste the sense of happiness while composing poetry. The innocence and purity of the newly born infant amuse me. So, I am happy with my own way of life. From my perspective, I think happiness surrounds us and warmly accompanies us when we really want to be happy. Happiness is not really difficult to find out but one has to leave all the complexities of life. Simpler we are, happier are the faces.

A Message from Pandemic

On 31st December twenty
 nineteen
 In Wuhan, Covid;19 was first
 seen.
 It reached India in no time
 Stepping out was merely a
 crime.
 At First, people did not take
 the virus seriously,
 As a result, it affected their
 health mysteriously.
 The virus was anonymous,
 Made the lives of people mo-
 notonous
 When in public, wear a
 mask,
 This was always a mandato-
 ry task.
 Never in life had anybody
 seen such a situation, Peo-
 ple's health was treated
 with caution.
 People were locked in their
 homes
 Across the different Covid
 zones.
 The cases around the world
 were countless
 The fear in the mind was
 endless.

The air we breathe had to be
 bought
 Saving lives was the only
 thing taught.
 Videos showed patients
 gasping for breath, Negli-
 gence led to sufferings and
 death.
 Social gatherings and crowd
 were banned
 Students and passengers
 were mandatorily scanned.
 Sounds of ambulance made
 everybody scared,
 Both young and old had to
 be cared.
 But one thing nobody no-
 ticed,
 The environment being to-
 tally silent.
 The air around was clean,
 With trees and leaves all
 green.
 The Pandemic gave the mas-
 sage,
 To protect the environment
 from damage.

By Nicky Sharma, Class-XI



Mobile Addiction

Mobile addiction has become a serious problem in the society, first we know what is mobile addiction. In today's modern world, every third person has become a victim of mobile addiction, but there are many people in the world who do not even know that they have become a victim of mobile addiction. Smartphone has become an important part of our life. This is the reason why we cannot stay away from mobile even for a few hours. A person checks social media, email, messages about 130 to 170 times in his entire day and many people spend half of their day playing games which is an example of mobile addiction. Mobile addiction has paralyzed people. Children, youth and people of almost all ages have come under the grip of this addiction. Children are the main victims of this addiction, because children are the future of the country and they can be paralyzed. Most of the children who are around 10 to 19 years old are in the grip of online games. Mobile addiction is also the reason for unemployment in the country. Mobile addiction is preventing the youth from moving towards their goals. Social media is a platform that has ended the physical world of games and meeting peoples. Mobile gives us the freedom to connect with anyone across the world. It is an easy medium to find any of our required information as well as a source of entertainment but the sad thing is that we are getting subjected to almost every mobile user is struggling with mobile addiction these days. According to a study, an Indian spends 1800 to 2000 hours a year on his mobile. The effect of smart phone internet addiction is such that only about 25% people meet their family and friends in a month. People are also losing their health due to this mobile addiction as weak vision, headache, stress, sleep problems, back and neck problems, people are also losing their relationships apart from all this. A recent research has revealed that about 5000 people are dying every year due to the use of mobile phones. Talking about India's figures today, more than 700 million people are using smart phones. Mobile addiction is ruining our life if it is not stopped on time then we can put our life in danger due to mobile addiction. The more we ignore it, it will become a bigger problem in future. It is ruining our life mobile is giving more harm than it is beneficial for us. People going through mobile problem should try to get rid of it and come back to your real world.

Value of Moments

A child born in a middle class family grew in such a scanty situation that to become successful and fulfil all necessities remained his only ambition. When his small wishes came true it felt like a dream come true. It is the story of a young boy whose strongest desire was to drive a motorbike gifted by his father. So ,he waited since class five for that day. The day arrived, he saw his boards result passing with 93% and informed his father about it. He called him and said “I am proud to have a son like you” with his unconditional love. In the afternoon a thought revolted in his mind the last words of his mother that his father also had a lifelong childhood dream which he wanted to pursue since his adolescence days. She passed away without completing the thought. Suddenly he realised that it will be hard for his father to purchase a motorbike but had complete faith that his father would never break the promise at any cost. Dressed like a rider in the evening he was eagerly waiting for the gift. Returning home his father handed him a beautifully wrapped gift box curious to see , he opened the gift but got disappointed seeing an autobiography. Filled with anger he raised his voice and said “This is what you gave me after several years of waiting.” He left the house saying that one day he will achieve everything on his own.

He never contacted his father again. Many years passed and the child achieved success in his business. He had a beautiful home and racing bike but he realized that he should go to his father ask for forgiveness. When he reached home, he saw the corpse of his father and broke down in tears.

Continue to the next page

He completed all the rituals and decided to live in the house with the memories. One day when he began searching for his father's documents and saw that the book which his father presented him was still new just as he had left there. With eyes full of tears he turned the pages a key dropped from the book, letters were there and a tag attached to it. On the tag words were there "PAID IN FULL" Drowned in the rivers of his regret and mistake he did, he became eager to know that one wish of his father which he could not accomplished in his life-time. He began searching for the wish from his father's companion , after two months of futile searching , he found 30 years old diary of his father and got to know the wish of opening a poultry farm and employ several middle class person who are not able to fulfil their basic necessities.

After learning the wish, he immediately sold his luxurious house without wasting an hour, and collected all the money he earned till that day. After twenty days, he inaugurated a poultry farm in the name of his father and also employed several poor farmers. Soon the business became profitable. Then he felt relaxed and happy and also made a statue of his father saying "I can't forgive myself as I have missed God's blessings just because they were not packaged as expected..."

Rohit Kumar Shaw, Class-XI



My school library

one of the most important feature of any school is it's library. Our school also has a small library but it has a great collection of various books like comics, story books, nobles, magazine, GK books, along with textbooks. Library is the best place where we can spend our leisure time. Library is the best place to study and learn new thing. I like to study comics here; you may like something else of your choice.

We find peace here .some student always comes to library in their games period.

There is also a projector from which we watch various educational videos and PPT. library is a very good platform to study and you must be sure that it will never deprive you of getting knowledge. Library provides us free access to all its books but it is our choice that we use it or not. Research shows students who visit library regularly, they scores better marks in exam than students don't.

So Come to library and take more marks as you can.



Anshika singh, Class-VI

If you wish

If you wish to see
See the greatness of Bose
and Nehru

If you wish to hear
Hear the speeches of Gan-
dhi and Martin Luther King

If you wish to speak
Speak the truth

If you wish to be brave
Be like Rani Laxmi Bai and
Azad

If you wish to love
Love the beauty of nature.

Archita Choudhary, Class– X

Dreamland

Fairies O fairies
Take me there
Where mountains are of
chocolates
And clouds of éclairs
With all my friends
I can go up there
A city, full of happiness.
A city where every answer
is right
And at night we can play
pillow fight.

Madhavi Upadhyay, Class– VIII



Martyr's Mother

I gave my child,
 Not an inch less.
 How can I accept my child?
 An inch less.
 I gave my child ,
 To kill terrorists.
 How can I accept my child ,
 Killed by terrorists.
 I gave my child ,
 To respect Nation's people.
 How can I accept my child ,
 Not respected by nation's people.
 I gave my child ,
 To host Tricolor .
 How can I accept my child ,
 Coming back home in tricolor.
 I gave my child ,
 To safeguard borders.
 How can I accept my child ,
 Martyred at the border
 I am a mother, I have to accept
 My child but how can I bear the
 pain of losing my child
 I am not the mother of a brave
 martyr
 I am the mother of all the brave
 martyrs

Subham Shekar, Class-IX

Sooth

A life of fire,
 Burns deep inside .
 The best of friends,
 Turned out to be worst .
 I wouldn't have fallen,
 If they didn't push me first .
 But they taught me something
 profound,
 And dared my path .
 Perfection is a myth,
 be with someone who can accept
 Your flaws and profound your
 feelings.
 Every story has two sides ...

Ahona Bagchi, Class – IX



You can

If you think you're beaten , you are
 If you think you dare not , you don't
 If you like to win , but think you can't
 It's almost a cinch, YOU WON'T !!
 If you think you'll lose, you're lost
 For out in the world you'll find
 Success begins with a fellow's will
 It's all in a state of mind.

If you think you are outclassed, you are
 You've got to think high to rise
 You've got to be sure of yourself before
 You can ever win the prize.
 Life's battles don't always go
 To the stronger or faster man
 But sooner or later the one who wins
 IS THE ONE WHO THINKS HE CAN !!

Your best

If you try you best
 Then you will never have to wonder
 About what you could have done
 If you'd summoned all your thunder
 And if your best
 Was not as good
 As you hoped it would be,
 You still could say
 "I gave today
 All that I had in me."



Sufia Khanam, Class – XI

Bitter truth

You aren't perfect,
So stop judging people.
You don't know what they went through,
Or they are dying from inside.
You don't know that they are just lying
To not make you worry about,
What they are hiding in their heart,
They're torn
They don't know what to do.
And you're making it worst
By saying, "they're lying and they
Should kill themselves too".

Sujit Kumar Singh, Class - VII

School Life

In each classroom, minds ignite,
Curiosity burning, with every lesson, we embrace, the
chance to learn and grow at a pace.
In classrooms bright, our dreams take flight, with cour-
age and passion, we'll shine so bright, through chal-
lenges faced, we'll stand tall,
In unity and hope, and we'll conquer all.
So, let the magazine be our voice,
to inspires, up life and rejoin.

Aditi Kulkarni, Class - XI

Failures are the Pillars of success

If you fail, never give up because “F.A.I.L” stands for first attempt in learning. Failures are essential to unlock the doors of success. It is the biggest and greatest life teacher in everyone’s life. Each failure brings one closer to success because there is a hidden lesson on success.

History too is sprinkled with such circumstances where success was granted only after passing through a series of failures. Indian freedom fighters like M.K. Gandhi, J.L. Nehru, B.R. Ambedkar, and S.V. Bhai Patel faced failures innumerable times, but never gave up and hence their continuous efforts and struggles led to the independence of our country India.

We often look at great people – Scientists, entrepreneurs, writers. We are blinded with their achievement but we never look past their talent. There is not a single ‘great man’ out there who has not worked hard despite failing multiple times.

“I have not failed. I’ve just found 10,000 ways that won’t work “, said Thomas Edison, the inventor of the first incandescent light bulb.

These people tried again and again until they succeeded. What sets great people apart from other people is their attitude towards failure.

Soumya Shaw, Class – XI

हिंदी अनुभाग



वो खास दोस्त

एक ख्वाब सा, एक प्यार सा
 तू बना मेरा पक्का यार था,
 दुनिया के सभी रिश्तों में
 तू सबसे खास था ।
 तू मिला मुझे ऐसे जैसे रात को मिला साथी
 चाँद था।

दिलों को दिलों से जोड़ने का
 प्यारा अहसास है दोस्ती,
 दोस्तों में सबसे खास है, तेरी दोस्ती।
 दिल से बनाया रिश्ता दोस्ती नाम का
 तू मिला ऐसे जैसे पंछी को मिला आकाश था।
 दोस्त हैं कई मगर तेरे
 जैसा न कोई खास था।

-मुस्कान ठाकुर, कक्षा- XI

माँ और पापा

माँ एक ऐसी बैंक है ...जहाँ
 आप हर भावना और दुख जमा
 कर सकते हैं
 और पिता एक ऐसे क्रेडिट कार्ड हैं
 जिनके पास बैलेन्स न होते हुआ भी
 सपने पूरे करने की कोशिश करते हैं
 मेरी मम्मी भोली भाली,
 पापा मेरे प्यारे हैं
 मम्मी-पापा दोनों मेरे ,
 सारे जग में न्यारे हैं,
 मैं हूँ उनका नन्हा - मुन्ना ,
 भोला भला प्यारा हूँ
 मम्मी पापा दोनों का ही
 आखों का मैं तारा हूँ

कक्षा-VIII



घाव

दिखाती नहीं हूँ मैं ज़ख्म किसी को ,
क्योंकि कोई मेरा विश्वास नहीं कर रहा कि मुझे सभी ने मुझे ज़ख्म
दिया है।

ये ज़ख्म मुझे रात में सोने नहीं देता है,
यही कारण है मैं बिना किसी मुक़ाबले के हार मान जाती हूँ।

कभी-कभी लगता है दिन रात से ज्यादा खराब होता है,
क्योंकि ये ज़ख्म मुझे दिन में भी जीने नहीं देते हैं।

मैं अभी बदल चुकी हूँ, किसी के पूछने पर बता नहीं
पाती हूँ कि इसी ज़ख्मों ने मेरा ऐसा हाल किया है ।

मैं किसी को अपना घाव नहीं दिखाती,
क्योंकि मैं किसी का ध्यान नहीं चाहती।



क्या कसूर था उसका ???

सिर्फ यही ना कि वो लड़की थी..।
 माँ के पेट में मारने की साजिश पैदा होने पर मातम-ए-रंजिश
 अपने बेटों की सूरत पर नाज
 और बेटी के वजूद पर ऐतराज
 क्या कसूर था उसका ???
 सिर्फ यही ना कि वो लड़की थी....
 खेलने जाने पर रोने का प्रयोग करे
 और पढ़ाई करने से टोकना
 बेटे से बे-इंतहा उम्मीद और प्यार
 और बेटी को डाँट और फटकार
 क्या कसूर था उसका ???
 सिर्फ यही ना कि वो लड़की थी
 स्याही गवाही देती है अखबारोंमें
 इज्जत दागदार हो जाती है बलात्कारों में
 फिर शादी के लिए मजबूर करने का उपयोग करे
 और फिर दहेज देकर उसका सौदा करना
 क्या कसूर था उसका ?
 सिर्फ यही ना कि वो लड़की थी
 फिर ससुराल में बेहिसाब जुल्म - ओ - सितम
 ना जाने कितने सहने पड़े हैं ज़ख्म
 उनकी आजादी का, जिम्मेदारियों के खंजर से कत्ल कर दिया जाता है
 क्या कसूर था उनका ?
 सिर्फ यही ना कि वो लड़की थी ...
 सच कहूँ तो जब-जब मैं कलम से लिखता हूँ बेबस दास्ता उनकी
 तो स्याही से ज्यादा पूछो ये सवाल करते हैं
 क्या कसूर था उसका ???
 सिर्फ यही ना कि वो लड़की थी....

शिक्षा - नीति

पढ़े लिखे लोग,
 पहले नौकरी करते थे,
 फिर मजदूरी करने लगे,
 और अब भीख मांगते हैं।
 यह हमारे लिए शर्म की नहीं,
 बल्कि गर्व की बात है ,
 क्योंकि हम दुनिया को ,
 यह दिखा सके कि,
 हमारी शिक्षा - नीति,
 इतनी सफल और अप-टू-डेट है,
 कि हमारे यहाँ भिखारी तक ग्रेजुएट हैं।

प्रियांशु साव, कक्षा - VIII

बारिश

कितना अच्छा होता ,
 कि मैं बारिश करवा पाता ।
 गर्मी से लोगों को मैं राहत दिला पाता ।
 सूखी हुई फसलों को मैं ,
 वापस उगा पाता ।
 किसानों की मैं थोड़ी बहुत मदद कर पाता ।
 कितना अच्छा होता ,
 कि मैं बारिश करवा पाता ।
 प्यासों तक मैं पानी पहुँचा पाता ,
 कितने लोगों का जीवन मैं बचा पाता ।
 कितना अच्छा होता ,
 कि मैं बारिश करवा पाता ।

प्रोवाव दिसित, कक्षा - VI



आतंकवाद

आतंकवाद एक ऐसे परिन्दे का नाम है, जिसने पूरी दुनिया को अपने कहर से हिला रखा है। इसकी कोई लिखित परिभाषा तो नहीं, पर मेरे शब्दों में जो दिल को बुरी तरह डरा दे वह आतंक है, जो दूसरों को डराने का काम करे वह आतंकवादी हैं और जो इस दुनिया में प्रदूषित हवा की तरह फैलता जा रहा है- वह आतंकवाद। कभी धर्म के नाम पर, कभी जात के नाम पर, न जाने कब तक हम यँही दूसरों के बहकावे में आकर अपने ही भाइयों का खून करते रहेंगे। सच पूछा जाय तो इन्सान तो आतंक नहीं फैला सकता क्योंकि उसके पास दिल है, यह तो उन दरिंदों का काम है जो इन्सान के रूप में हमारे बीच रह रहे हैं।

आतंकवाद ने काफी हद तक आम लोगों को हैरान और परेशान किया है। इन आग की लपटों ने कितनी ही ज़िंदगियों को बरबाद किया है। 9/11 के हमले में 2,819 लोग मारे गए, 146,100 लोगों की नौकरी चली गई और करीबन 3,051 बच्चों ने अपने माता-पिता खो दिए। वहीं 26/11 में 164 लोग मारे गए और करीबन 308 लोग घायल हो गए। 2016 का उरी आतंकी हमले में 19 भारतीय सैनिक मारे गए थे और 19-30 अन्य घायल हो गए थे। 2019 का पुलवामा आतंकी हमले में सीपीआरएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे। अगर मैं ऐसे ही आतंकी हमलों के बारे में बताता रहा तो यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। इन आंकड़ों ने यह बात तो साफ कर दी है कि आतंकवाद आज के इस युग का सबसे बड़ा राक्षस है।

इस सिलसिले को हमें ही खत्म करना होगा। अब सिर्फ अखबार पढ़ने तथा समाचार देखने का समय नहीं है। अब समय है करने या मरने का। किसी चमत्कार की उम्मीद में बैठे रहने से स्थिति सुधरने की जगह और बिगड़ेगी। ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं। मेरे दोस्तों चलिए जागें तथा ऐसा जागें कि इन समाजद्रोहियों की रातों की नींद उड़ा दें तभी हम साबित कर पाएंगे कि हम ईश्वर की सबसे अनमोल देन - 'इन्सान' हैं।



परीक्षा का भूत

कक्षा हुए सुनसान
टी वी मोबाईल पर लगा पहरा महान
बच्चे हैं परेशान
आई परीक्षा आलीशान
जिसने बना डाला प्यारी नानी को
डॉट फ़टकार की दुकान
मम्मी-पापा ने भी पकड़ी जान
सोते-जागते छीना चैन
पढ़ते-पढ़ते जैसे बंद हुए नैन
मैडम की तनी भृकुटी का हो जाता है
ध्यान
टूट जाती है निद्रा
हम नहीं हो पाते अंतर्ध्यान
हर पल मन कहता, कोई तो हो ऐसा
महान
जो हमारी इससे छुड़ाए जान
एक दिन सपने में आया एक दूत
बताया मत समझो परीक्षा को भूत
रोज पढ़ो-लिखो तब भागेगा यह भूत
हर दिन पढ़ने की आशा जगाकर
पा लो इस बार विजय महान
बात समझ में मेरी आ गई
कमर कसा इस भूत पर
विजय पाने की मैंने ठानी।

अनुपमा कुमारी, कक्षा VIII

स्कूली बस्ता

रंग-बिरंगा मोटा कपड़ा,
कोई महंगा, कोई सस्ता।
बड़े काम का होता है यह,
प्यारा सा स्कूली बस्ता॥
नेक बात सिखलाने वाला,
हित-अनहित बतलाने वाला।
तरह-तरह की लेकर पुस्तक,
चलता बस्ता ज्ञान वाला।
अंधकार में राह दिखाता,
कभी न देता धोखा।
बड़े काम का होता है यह,
प्यारा सा स्कूली बस्ता॥
काँपी, कलम, किताबें ढोकर,
करता मदद मान मद खोकर।
जाति- पाँति का भेद न करता,
मेहनत करता हृदय खोलकर।
डगर-डगर में ज्ञान- सुरभि,
फैलाता है ज्यों गुलदस्ता।
बड़े काम का होता है यह,
प्यारा सा स्कूली बस्ता॥

जीत साव, कक्षा VII

नई शिक्षा नीति

हमारा देश प्राचीन काल से ही शिक्षा का केंद्र रहा है। किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान और कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाना है। आजादी के बाद भारत में पहली शिक्षा नीति सन 1968 में बनाई गई थी जो मुख्यतः लॉर्ड मैकाले की अंग्रेजी प्रधान शिक्षा नीति पर आधारित थी। इसमें सन 1992 में कुछ संशोधन भी किए गए किंतु इसका ढाँचा मूलतः अंग्रेजी माध्यम शिक्षा पर ही केंद्रित था। परंतु 34 वर्षों बाद 29 जुलाई 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति का बदलाव हुआ और नई शिक्षा नीति ने प्रवेश लिया।

‘समाज में शिक्षा का दीपक जलाएंगे
देश को प्रगति के पथ पर ले जाएंगे’

भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का जन्मसिद्ध अधिकार है। नई शिक्षा नीति के आधार पर बच्चों के व्यावहारिक शिक्षा को महत्व दिया गया ताकि बच्चे पढ़ाई से परेशान न होकर कुछ सीखने की कोशिश करें और अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा का उपयोग कर सकें। इस नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा को 5+3+3+4 के आंकड़े में विभाजित किया गया है। इसके अंतर्गत बच्चे की शुरुआती पढ़ाई उसकी अपनी मातृभाषा में होगी जिससे उन्हें समझने में परेशानियों का सामना ना करना पड़े। इस नीति के तहत विद्यार्थियों को रटने की प्रवृत्ति न सिखाकर बल्कि उन्हें उत्तरदायी तथा कुशल बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तकों का भार कम करने की कोशिश की गई है। बच्चे अपने मनचाहे विषयों को लेकर आगे बढ़ सकते हैं।

नई शिक्षा नीति को विभिन्न भागों में बाँटा गया है -

फाउंडेशनल स्टेज - इसमें 3 साल की प्री-स्कूलिंग तथा कक्षा एक और दो शामिल होगी।

प्रारंभिक चरण - यह 8 से 11 वर्ष की आयु के साथ कक्षा तीन से पाँच का गठन करता है।

मध्य चरण - यह 11 से 14 वर्ष की आयु के साथ कक्षा 6 से 8 तक का गठन करेगा।

माध्यमिक चरण - यह 14 से 17 वर्ष की आयु के साथ कक्षा 9 से 12 का गठन करेगा। इन चार वर्षों को बहुविषयक अध्ययन के लिए विकल्प के साथ जोड़ा जाएगा। अब केवल एक अनुशासन में अध्ययन करना आवश्यक नहीं होगा।

अगले पृष्ठ पर जारी

छात्रों को केवल तीन बार यानी कक्षा तीसरी कक्षा पाँचवीं और कक्षा आठवीं में परीक्षाएँ देनी होंगी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच नवीन विचारों के समावेश के साथ सहभागिता, महत्वपूर्ण सोच और तर्क करने की क्षमता को विकसित करना है। बच्चों के विकास से ही समाज में नई सोच आएगी और हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होता जाएगा। शिक्षा के माध्यम से ही हम अपने सभी सपनों को पूरा कर सकते हैं। वर्तमान में वही देश सबसे शक्तिशाली है जिसके पास ज्ञान की शक्ति है। शिक्षित मनुष्य को समाज में सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता है।

नई शिक्षा नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख डॉक्टर के. कस्तूररंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा प्रस्तुत किया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति होगी। इस नीति ने दसवीं की बोर्ड परीक्षा को हटाकर बच्चों के मन से डर को भगा दिया। अब सभी बच्चे खुले मन से अपने पसंदीदा विषयों को लेकर आगे बढ़ सकते हैं। उनके ऊपर कोई मानसिक दबाव नहीं रहने के कारण उनका मानसिक विकास तेजी से होगा। इस नीति में मातृभाषा को भी महत्व दिया गया है ताकि बच्चे बिना किसी झिझक के सभी के सामने अपनी बातों को रख सकें।

‘यदि जिंदगी के पथ में आगे जाना है
तो नई शिक्षा नीति को अपनाना है’

अतः हम कह सकते हैं कि यह भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है, जो सभी को उच्च गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराकर भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाएगी। इस नीति से छात्रों में भारतीय होने का गर्व केवल विचार में ही नहीं बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी रहेगा। अंततः यह कहना उचित है कि जिंदगी में अगर कुछ करना है तो शिक्षा को अपनाना होगा ताकि हम देश को और ऊँचाई तक ले जा सकें।



निकी शर्मा, कक्षा -XI

मेरी माँ

मेरी जन्नत भी तू
मेरी मुकमल्ल भी तू
मेरी ख्वाहिश भी तू है
मेरी माँ, माँ

मेरी खुशी में भी तू
मेरे दर्द में भी
अब कितना रोएगी तू
माँ.....

मेरे लिए ही किया जो अब
तक तूने
मेरे दर्द भी सहे
मेरे घाव भी सहे !
ओ ! मेरी माँ ।
मेरी चादर बन गई वह जो
पल्लू
मेरे घर को तूने, जो था
रोशन किया ,
क्या थी वजह जो तूने मुझे
छोड़ दिया ,
ओ ! मेरी माँ ,

मोपिका पान कक्षा -IX

उन्हें कोई नहीं रोक सकता
तेरे हौसले एक दिन रंग लाएँगे
और सफलता की खुशियाँ
उनके संग आएँगे

क्योंकि जिनकी आँखों में
कुछ कर दिखाने का
जुनून, और रोम-रोम में
अपने लक्ष्य को पाने का गुर्रर
उन्हें कोई नहीं रोक सकता

इसलिए तू लड़ता जा
कभी गिरता, कभी
सम्हलता जा

नंदनी साव कक्षा -IX



कट्टर सत्य

जमाने को हमने बदलते हुए देखा है,
 एक चेहरे में कई चेहरा लगाते हुए देखा है।
 रिश्ते में प्यार और अपनापन का जमाना पहले देखा,
 आज अपनों को जज्बातो के साथ खेलते हुए देखा।
 रिश्ते खून के हों या दिल के,
 हमने खून के आंसू बहते हुए और दिल को टूटते हुए देखा।
 नादान थे हम समझ ना सके बदलते हुए जमाने को,
 प्यार जज्बातों को रौंद कर अपनों को आगे बढ़ते हुए देखा है।
 रिश्ता बरसों का था देख ना सकी मेरी आंखें,
 क्योंकि आंखों पर प्यार और जज्बातो का चश्मा पड़ा था।
 चश्मा जब हटा चेहरे से देर हो गई थी,
 पास कुछ भी ना था, जिंदगी रुक सी गई थी ।
 बदलना प्रकृति का नियम था हमने सुना था,
 बदलना इस इतना दर्दनाक है कभी सोचा ना था

त्रिशाला, कक्षा-XI

पुस्तक

पुस्तक में है असली ज्ञान।
 पुस्तक का करना सम्मान।
 मत इसके पन्ने फाड़ो।
 इस पर जमा धूल झाड़ो।
 चाहे जैसा युग आए।
 पुस्तक की महिमा गाएँ।
 पुस्तक पढ़ विद्वान बनें
 भारत की मुस्कान बनें
 पुस्तक बिना जीवन रीता।
 कहते हैं भगवद् गीता ।
 पुस्तक है ज्ञान के सागर।

माधवी उपाध्याय, कक्षा-VIII



हम बालक छोटे नादान

हम बालक छोटे नादान
 सदा करें गुरु का सम्मान ॥
 प्रति दिन हम पढ़ने जाते
 शिक्षा से कभी न घबराते
 शिक्षक ज्ञान हमें हैं देते
 हम सम्मान उन्हें हैं देते ॥
 माता-पिता हमें हैं प्यारे
 ज्ञान दीप हैं गुरु हमारे
 जब हम पढ़ लिख कर काम
 करेंगे
 जग में अपना नाम करेंगे
 याद गुरु का वचन करेंगे
 नेत्र मूँद कर नमन करेंगे ॥

सुजीत कुमार सिंह, कक्षा - सात



धरती भारतवर्ष की

यह धरती श्रीराम की
 यह धरती गौतम बुद्ध की
 माँ गंगा जिसे शुद्ध करे, है
 धरती भारतवर्ष की ॥1॥
 यह धरती कुरुक्षेत्र की
 यह धरती कर्म-धर्म की
 गीता के ज्ञान की,
 यह धरती भारतवर्ष की ॥2॥
 यह वीरों की धरती है
 धरती यह वीरों की,
 यह धरती भारतवर्ष की ॥3॥
 यह धर्म सदा विजयी हो
 विजयी सदा धर्म हो,
 अधर्म का नाश हो,
 यह धरती भारतवर्ष की ॥4॥
 मातृभूमि के लिए सब एक
 हो चले
 पुरानी सोच को छोड़, अब
 सब एक हो चले
 यह नया भारतवर्ष है ॥5॥

आयुष्मान प्रसाद, कक्षा-VII

माता - पिता

करते वो मुझसे इतना प्यार
जितना करते मुझे दुलार
में उनकी आँखों का तारा हूँ
वो मेरे दिल का सितारा हैं॥

कभी वो मुझे डाँटते है
कभी करते मुझसे प्यार
मेरी हर ख्वाहिश पूरी करते
और करते मुझे दुलार

पिता नहीं वह जादूगर
माता नहीं वह परमेश्वरी
करते मेरी हर समस्या का हल
ऐसे हैं मेरे माता पिता ॥

ऋषिका गुप्ता, कक्षा-VIII



नारी

नारी यदि वरदान है
वो सबसे ही महान है
और यदि अभिशाप है
तो जिम्मेदार आप हैं ।
नारी ने जग को जन्म दिया
जग ने उसको अभिशाप कहा
करुणा, ममता की मूरत को
पूर्व जन्म का पाप कहा ।
धर्म था उसका जुल्म को सहना
पर्दे में था उसको रहना ,
पूछे बिना नहीं कुछ करना
न पढ़ना था न लिखना था ।
नारी ने अब बोलना सीखा
अपने बल पर जीना सीखा ,
भीड़- भाड़ में चलना सीखा ,
भरी सभा में बोलना सीखा
नारी अब वरदान है
इस धरती की शान है ।

सुहानी खातून, कक्षा-XII

भारत : क्या था , क्या हो गया और क्या होना चाहिए

किनारे स्थित सिंध के
 बस मानव इतिहास का गौरव हिन्द हूँ ।
 कई नाम हैं मेरे
 आर्यवर्त, इंडिया, हिंदुस्तान, भारतवर्ष॥...
 इन नामों की यात्राओं की कुछ बातें बतानी है,
 ये आर्य से लेकर सन् सैंतालीस की कहानी है ।
 कई लोग हैं मेरे घर में,
 जिसमे कुछ हिन्दू तो कुछ तुर्किस्तानी हैं
 फिर भी सब कहते हिंदुस्तानी हैं।
 हिंदुस्तान की एक ही पहचान है
 एक हाथ में गीता तो दूसरे में कुरान है
 हाँ ! यही सच्चा हिंदुस्तान है ।
 पर अब...
 टूट रही हूँ,
 घुट रही हूँ
 अंदर ही अंदर लुट रही हूँ
 अब फर्क नहीं पड़ता कौन है लुटेरा
 क्या स्वदेशी क्या विदेशी।

भव्या साव, कक्षा - XI



एक इंसान है ना तू

इंसान है ना तू

इसके नाते कुछ कर के दिखा

जिस मिट्टी से जन्मा है

उस मिट्टी के लिए कुछ कर के तो दिखा,

बातों से नहीं, ऊँचाई से छलांग मार के तो दिखा।

सिर्फ जमीन भर नहीं, आसामान को छू कर तो दिखा।

काम ऐसा कर कि तेरा नाम हो जाएगा

आवाज़ तेरी पूरी दुनिया तक पहुँच जाएगी

दरिंदगी से नहीं इंसानियत से सही

तेरे नाम से नहीं तेरी पहचान से सही

अपनी हाथों की लकीरों से अपनी किस्मत बनाएगा

इसी इंसानियत से तू इस दुनिया का मंदिर सजाएगा

धर्मों के मेल से इतिहास बनाएगा

एक ही दुनिया हमारा

सबके साथ रहना सिखाएगा

यासनिखा साव, कक्षा -X

राजनेता

करते हैं बड़ी-बड़ी बातें
 कह रखते नहीं रिश्ते-नाते, वह कौन है?
 सभा में करते हैं वायदे बड़े वह
 बताकर हमारे फायदे - वह कौन है ?
 उन्हें नहीं कोई फर्क कि जनता जाए सड़क
 प्रतिज्ञा लेकर देते हैं साथ छोड़ वह
 जनता की हर एक मोड़ - वह कौन है?
 भीड़ थी बहुत वहाँ पर
 जहाँ थे खड़े वह आम जनता की थी उम्मीद जगी
 यह सोचकर कि उनके सपनों की लौ जली।
 अब बेचारे, लाचार को क्या पता
 उन्हें लूटकर करेंगे वह कंगाल - वह कौन है?
 है नादान बड़ी यह जनता
 इन्हें लूटकर दिखाते हैं यह अपनी क्षमता
 बड़ी-बड़ी बातों से जाते हैं मुकर
 देते हैं यह धोखे और ठोकर - वह कौन है?
 पूछेंगे नहीं कि वह है कौन?
 बताती हूँ, ये हैं आम जनता के भगवान।
 बड़ी-बड़ी बातों से पता चला यह हैं
 राजनेता, आम जनता के भगवान।
 हाय ! तिरस्कार है ऐसे भगवान पर
 जो देखते नहीं अपने भक्तों की जरूरत
 वह कौन है?

सुहानी खातून, कक्षा-XII



दवा की शीशी

आज का दिन बड़ा खास है। सुबह से ही बबीता के घर में काफी हलचल है। सभी इधर से उधर दौड़ रहे हैं। आज बबीता को दवा खाने की भी फुर्सत नहीं। यों तो रोज सुबह होते ही सबसे पहले दवा की शीशी उठाती है। जब तक चार गोलियाँ ना खा ले कोई काम नहीं कर पाती। पर आज तो जैसे जादू हो गया। दवा की शीशी की तरफ नज़र ही नहीं गई। सच ही तो है प्रसन्न मन को दवा की क्या आवश्यकता?

आज पूरे दो साल बाद बबीता का बड़ा बेटा हर्ष अपनी पत्नी गीता तथा चार साल के बेटे हर्षित के साथ अमेरिका से आ रहा है। पति के गुजर जाने के बाद बबीता अपने दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ कोलकाता चली आई थी। उसने अकेले ही सारी ज़िम्मेदारियाँ बखूबी निभाई। शिक्षा तथा संस्कार किसी में कोई कमी नहीं छोड़ी। दोनों बेटों की शादी भी धूमधाम से हुई। हर्ष को अमेरिका में अच्छी नौकरी मिल गई तथा छोटे बेटे विनय को बैंक में नौकरी मिल गई।

पहले तो हर्ष हर साल कोलकाता आता था। बबीता इस बात से काफी खुश थी कि उसने बेटे को अच्छे संस्कार दिए हैं। पोते तथा बहू को देख वह इतनी खुश हो जाती कि दवा का होश तक न रहता। पूरा परिवार एक साथ मिलकर खाना खाता तथा बातें करता। दोनों बहुएँ खूब हँसी-मज़ाक करतीं। बबीता की उम्र मानो दस साल कम हो जाती।

धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलने लगीं। अब बेटा आता तो ढेरों काम लेकर आता। सारा दिन लैपटॉप पर लगा रहता। बहू बाज़ार निकल जाती तथा पोता आई-फोन में व्यस्त रहता। फिर भी बबीता अपनी छोटी बहू के साथ सारा दिन रसोई में लगी रहती। एक दिन दोनों बहुओं में कुछ कहा सुनी भी हो गई। गीता नहीं चाहती थी कि हर्षित को बाहर की कोई चीज़ खाने को दी जाए। बेटे को चाट खाते देख वह भड़क उठी। बड़ी मुश्किल से बबीता ने मामले को शांत किया।

अगले पृष्ठ पर जारी

हर्ष और गीता दिन-रात बस अमेरिका की ही बातें किया करते। कोलकाता में उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। विनय तथा उसकी पत्नी हर संभव प्रयास करते कि भैया-भाभी को कोई असुविधा ना हो, परंतु उनका हर प्रयास असफल हो जाता। बबीता का दिमाग कहता कि कुछ टूट रहा है, पर माँ के दिल को कौन समझाए? उसे तो यही लगता कि बच्चों का बचपना अब तक खत्म नहीं हुआ।

माँ समझना चाहे या ना चाहे पर विनय इस बात को जान गया था कि उनका परिवार टूट रहा है। हद तो तब हो गई जब एक बार माँ के गंभीर रूप से बीमार होने पर विनय ने हर्ष को कोलकाता आने को कहा तब हर्ष ने कहा, “बीमारी सिर्फ पैसे से ही ठीक हो सकती है और वह मैं भेज दूँगा। पर आ नहीं पाऊँगा।” विनय ने यह बात किसी को नहीं बताई। वह तो यही चाहता था कि माँ का भ्रम ना टूटे।

आज हर्ष दो साल बाद आ रहा है। घर में सभी खुश हैं। विनय ने बैंक से छुट्टी ले ली है। छोटी बहू भी सुबह से तैयारियों में लगी है। उम्मीद का दामन अब तक छूटा नहीं है। इस बार वह जेठानी को शिकायत का कोई मौका नहीं देना चाहती। बबीता बार-बार घड़ी देख रही है। कहीं घड़ी रुक तो नहीं गई। कलाई पर बंधी घड़ी को भी देखा वह भी वही समय बता रही है। आज तो जैसे सूइयाँ सो-सी गई हैं। बबीता ने फिर एक बार पूरे घर की व्यवस्था का निरीक्षण लिया। तभी मोटर की आवाज़ सुनाई पड़ी। पूरा घर दरवाज़े पर आ गया। हर्ष उतरा और उसने माँ के पैर छुए। माँ गदगद हो उठी। पर उसकी नज़रें अभी तक मोटर पर ही टिकी थी। तभी हर्ष ने बताया कि गीता और हर्षित नहीं आ पाए। हर्षित भारत नहीं आना चाहता था। हर्ष भी सिर्फ चार दिनों की ही छुट्टी ले पाया है।

विनय ने भारी मन से माँ को देखा। माँ की घटी हुई उम्र फिर बढ़ गई थी। अचानक माँ ने कहा, “मेरी दवा की शीशी तो लाकर दे दो। पैरों में बड़ा दर्द है।”



संस्कृत अनुभाग



दूरदर्शनस्य लाभाः नष्टाः च

अस्माक जीवने दूरदर्शनस्य स्थान अतिमहत्तरं भवति । सर्वेषु गृहेषु दूरदर्शनम् अवश्यम् घटकं भवति । यथा अन्न आदिक च तथा जीवने अनिवार्य घटक दूरदर्शन । जनमध्ये सार्वत्रिकं नातं किं वा संजातमिति तस्मिन् एवं निमिषे जनेषु दर्शनसाध्यम् करोति दूरदर्शनम् । एका सुहृदिव अस्माकं समीपे स्थित्वा सर्वाणिकर्याणि कथयति दूरदर्शनम् । दूरदर्शनस्य गुणाः दोषाः च सन्ति । दूरदर्शनम् वार्ताभिः बालान् वृद्धान् च विज्ञापयति । अमेरिकादेशे संजातम् कार्यमपि तस्मिन् क्षणे एव अस्माकं भारतदेशे वर्तमानकाले कुटुम् शक्यते । आधुनिककाले यत्रकुत्रापि संजाता वार्ता हार्मनैव भुवने दूरदर्शनद्वारा प्रसारयति । पुरातनकाले एवं नासीत् । दूरदर्शनस्य 'रियालिटी षो' द्वारा कलाकराणां कलाकारिणां च सर्वप्रतिभा वर्धयितुं शक्यते । महात्माना दूरदर्शनेन द्वारा गीतानि श्रांतुम् शक्यते । चलचित्र प्रष्टुम् शक्यते । महात्मानां जीवनचरित्र तेषां महत्वं च द्रष्टुम् शक्यते । दूरदर्शनम् अस्मिन् गाधुनिककाले अनिवार्याटकं अस्ति ।

अव एतत् सर्वत्र प्रसारणम् राज्यनिन्तारस्य कर्तव्यम् अस्ति । 'अधिक' चेत् अपि अमृतं विषं भविष्यति' अनंग प्रमाणन ज्ञातुं शक्यते

दूरदर्शनस्य उपयोजे अपि नियन्त्रणं अवश्यम् ।

जीत साव सप्तमी कक्षा



शुभ गुरुपूर्णिमा

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतं ज्ञानम् ।

ज्ञानस्य फलं विरतिः विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥

विनय का फल सेवा है, गुरुसेवा का फल ज्ञान है, ज्ञान का फल विरक्ति (स्थायित्व) है, और विरक्ति का फल आश्रवनिरोध (बंधनमुक्ति तथा मोक्ष) है ।

सुभम साव अष्टमी कक्षा

प्रार्थना (गायत्री मंत्र.)

ओइम् भूभुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य

धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

जो सभी जीवों को प्राण देता है, सभी दुखों को दूर करता है तथा नाना प्रकार के सुखो को देने वाला है, हम सब उस श्रेष्ठ, दीप्तिमान देवता सूर्य का ध्यान करें (जिससे) कि वह हमारी बुद्धि को प्रेरित करता रहे।

साधनासावः षष्ठीकक्षा

मम संस्कृतम्

मम नाम अंकित सावः अस्ति. अहम् अष्टमी श्रेण्यां पठामि। मम प्रियः विषयः संस्कृतम् अस्ति। अस्माकं संस्कृतशिक्षक श्री किशोरदत्तः महोदयः अस्ति । सः अस्मान् श्लोकमन्त्रान् शिक्षयति। वयं श्लोकमन्त्रान् प्रेम्णा गायामः।

अंकित सावः अष्टमी कक्षा

श्लोक...

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुखे नमः ॥

गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु महेश्वर देव (शिव) हैं। गुरु (ही) साक्षात् परब
हैं, ऐसे उन गुरुदेव को नमस्कार हो !

अपेक्षारासकरः सप्तमीकक्षा

सुभाषितानि श्लोका

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम

उदारचरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

नारिकेल समाकाराः दृश्यन्ते हि सुहज्जना

अन्ये बदरिकाकाराः बहिरेव मनोहराः ॥

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारत ।

हरेंदर यादवः सप्तमी कक्षा



भर्तृहरि पद्यानि

साहित्य.संगीत.कला.विहीनः साक्षात् पशुः
पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥
येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शील न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण भृगाश्चरन्ति ॥

आर्यन भारती सप्तमी कक्षा

सदाचारः

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः ॥
सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः ।
श्रद्धधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ॥

आमितेशवर्मा अष्टमी कक्षा

DRAWING SECTION



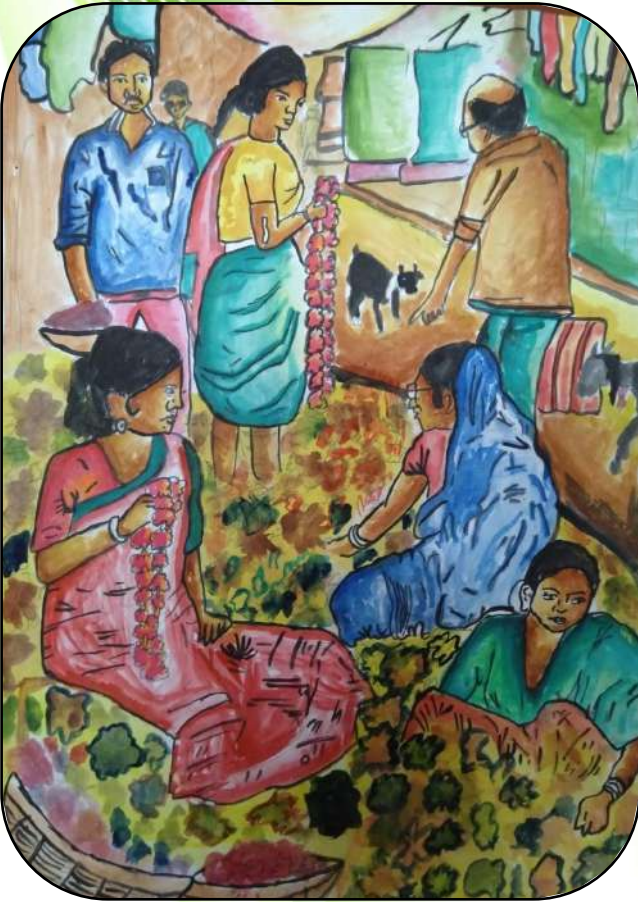
कला अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता



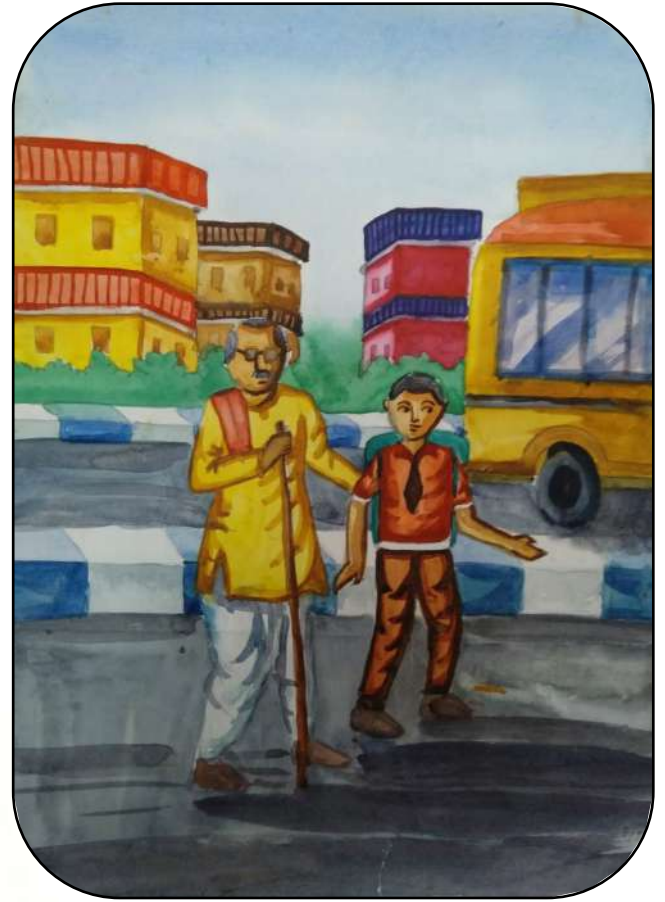
Siddhartha Prasad, Class-VI



Muskan Thakur, Class-XI



Aman Sah Gond, Class-VIII



Adarsh Shaw, Class-VIII

कला अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता



Adarsh Shaw, Class-VIII



Adarsh Shaw, Class-VIII



Aman Sah Gond, Class-VIII



Sanskriti Paswan, Class-VII

**THANK
YOU**

